❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा दृण।।

ऋग्वेद 1/57/5

हे ऐश्वर्यशालिन् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।

O the Bounteous Lord! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 42, अंक 25 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 13 मई, 2019 से रविवार 19 मई, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पंचम आर्य महासम्मेलन, दिल्ली (20-22 फरवरी 1944) के अवसर पर डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का ऐतिहासिक अध्यक्षीय भाषण

विचार स्वातन्त्र्य पर आघात सहन नहीं होगा

दिल्ली में हुए पंचम अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष सर्वसम्मति से डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी चुने गये थे। जब सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार ने ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के चौदहवें समुल्लास (जिसमें मुस्लिम मजहब की तर्कसंगत आलोचना है) पर प्रतिबन्ध लगाया तो हैदराबाद के सत्याग्रह से लौटकर थकान भी न उतार पाये कि आर्यजन फिर फुरहरी ले उठे। हैदराबाद सत्याग्रह से पूर्व जिस प्रकार शोलापुर में श्री एम.एस. अणे की अध्यक्षता में एक अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन कर हैदराबाद की ओर प्रयाण का शंख फूँका गया था, ठीक उसी प्रकार का अवसर दोबारा आया, जब सिन्ध की ओर प्रयाण करना था और किसी भारतीय संस्कृति के उपासक का अध्यक्ष पद से आशीर्वाद लेकर कूच का नगाड़ा बजाना था। डॉ. मुखर्जी की अध्यक्षता से महासम्मेलन का वातावरण जहाँ एक ओर गम्भीर बना हुआ था, वहीं उनसे उत्प्रेरित आर्यों का जोश धधकता हुआ अंगार प्रतीत हो रहा था।

श्री मुखर्जी का अध्यक्षीय भाषण न केवल आर्यसमाज की, अपितु हिन्दूसमाज एवं भारतीयता के अभिमानियों की अनुपम निधि है। उन्होंने हिन्दुओं के प्रत्येक वर्ग को संगठित होकर जहाँ भारत की पुनीत संस्कृति और उसके 'सत्यार्थप्रकाश' जैसे अमर ग्रन्थों की रक्षा के लिए आह्वान किया, वहाँ सिर पर होकर उतरने का दुस्साहस करनेवाले मुस्लिमों को चेतावनी देते हुए कहा- "अब वह समय भी आ गया है जब उस अँगरेज़ी सत्ता को भी उखाड़ कर फेंका जायेगा जो इनकी पीठ पर बोल रही है।" श्री मुखर्जी का वह ऐतिहासिक भाषण ज्यों-का-त्यों नीचे दिया जा रहा है। - आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र

आप लोगों ने मुझे अखिल भारतवर्षीय आर्य सम्मेलन के पाँचवें अधिवेशन का सभापति निर्वाचित करके जो सम्मान दिया है, उसे मैं हृदय से अनुभव करता हूँ। आपका सम्मेलन, कार्यक्रम तथा कार्यों पर विचार करने के लिए नियमित रूप से होनेवाली सभाओं की भाँति प्रतिवर्ष नहीं होता, प्रत्युत विशेष परिस्थितियों का सामना करने के लिए तथा भारतवर्ष के हित और विशेषरूप से हिन्दू जाति के अधिकारों से सम्बन्ध रखनेवाले महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के विषय में आर्यजनों का मत निर्धारण करने के लिए जगत् के आर्यमात्र की 'प्रतिनिधि सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा' द्वारा आमन्त्रित किया जाता है। यह अधिवेशन विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि यह हमारे देश के जीवन की बहुत ही पेचीदा घड़ी में हो रहा है। एक ओर विनाशकारी युद्ध मानवी सभ्यता की जड़ों को खोखला कर रहा है, और दूसरी ओर भारतवर्ष की आन्तरिक दशा को ऐसी अर्थव्यवस्था में डाल दिया गया है कि देश के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक अधिकार खतरे में पड़ गये हैं।

आज मुझे आर्य समाज द्वारा राष्ट्र की जागृति के लिए किये गए महान कार्यों के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करने का जो अवसर मिला है, उसका मैं स्वागत करता हूँ। हमारी प्यारी मातृभूमि के घटनापूर्ण इतिहास में भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर बारम्बार आक्रमण होते रहे हैं। कई सदियों से हम राजनीतिक दृष्टिकोण से पराधीन हैं तो भी समय-समय पर देश में ऐसे महात्मा, ऋषि और आचार्य जन्म लेते रहे हैं जो अपने विचारों और कार्यों के प्रभाव से जाति को गिरावट से बचाते और उसके मन में नये जीवन और ओज का संचार करते रहे हैं। हमारी जाति के अनेक श्रेष्ठ पुरुष जन्म लेते रहे हैं, जो विचार और कार्य की दृष्टि से वीर कहलाने के अधिकारी थे। हिन्दू, बौद्ध और जैन राजा संरक्षक और धर्मगुरु, महान सिद्ध और भक्त, ईश्वरभक्ति के मद में मस्त सन्त और भक्त, ऐसे उद्भट विद्वान् आचार्य जिन्होंने अपने बुद्धिबल से धर्म राज्य की स्थापना का प्रयत्न किया, ऐसे सन्त, साधु और वैरागी जिन्होंने मुसलमानों द्वारा भारत की विजय के पश्चात् उत्पन्न होकर मुसलमान सूफियों और फकीरों का स्वागत किया और जिन्होंने भारतीय सभ्यता की

- शेष पृष्ठ 4 पर

ध्रुव त्यागी की हत्या का विरोध : उपराज्यपाल एवं दिल्ली पुलिस से कड़ी कार्यवाही करते हुए सभी आरोपियों को गिरफ्तारी की मांग

दिल्ली के बसई दारापुर में रविवार की देर रात्रि हुई श्री ध्रुव त्यागी की हत्या एवं पुत्र अनमोल पर घातक हमला हुआ। पिता ध्रुव त्यागी अपनी पुत्री से हुई छेड़छाड़ का विरोध शिकायत करने के लिए आरोपियों के घर गए थे जहां जहांगीर खान ने अपने तीनों आरोपी बच्चों के साथ मिलकर उन पर हमला कर दिया और चाकू से गोदकर हत्या कर दी। पिता को बचाने गए पुत्र अनमोल भी गम्भीर रूप से घायल हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने छेड़छाड़ के विरोध में हुए इस हत्याकांड का कड़ा विरोध करते हुए दिल्ली के उपराज्यपाल श्री अनिल बैजल जी से और दिल्ली पुलिस से इस मामले में कड़ी कार्यवाही एवं शमशे आलम सहित सभी ग्यारह आरोपियों गिरफ्तार करने की मांग करते हुए कहा है कि यह पहला मामला नहीं है जब मामूली बात पर इन धर्म विशेष के लोगों ने हत्या जैसे कुकृत्य को अंजाम दिया हो। दिल्ली आर्य प्रतितिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने समस्त आर्यसमाजों और आर्य संस्थानों से उपराज्यपाल श्री अनिल बैजल जी को इस हत्या के विरोध में पत्र भेजने का आह्वान किया है। उन्होंने दिल्ली सरकार से इस मामले में कार्यवाही करने और श्री ध्रुव त्यागी जी के आश्रितों को सरकारी नौकरी, उचित मुआवजा और सुरक्षा देने की भी मांग की।

- विनय आर्य, महामन्त्री

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर करें पर्यावरण संरक्षण में सहयोग

2 से 5 जून तक आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थाएं अधिकाधिक स्थानों - पार्कों, सकड़ों, चौक-चौराहों पर

सार्वजनिक रुप से पर्यावरण शुद्धि यज्ञों का आयोजन करें

यज्ञ के अवसर पर वितरण हेतु प्रचार पत्रक एवं बैनर प्राप्त करने हेतु श्री सन्दीप आर्य 9650183339 से सम्पर्क करें

वेद-स्वाध्याय

मिलकर चलो, बोलो

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। – *ऋ० 10/19/12*
ऋषि: **संवननः।।** देवता – **सञ्ज्ञानम्।।** छन्दः **अनुष्टुप्।।**

शब्दार्थ – हे मनुष्यो! **संगच्छध्वम्** = मिलकर चलो, आचरण करो, **संवदध्वम्** = मिलकर बोलो, और **वः** = तुम्हारे **मनांसि** = मन **संजानताम्** = मिलकर ज्ञान प्राप्त करें, समान ज्ञानवाले हों; **यथा** = जैसेकि **पूर्वे देवाः** =पहले के देव लोग **संजानानाः** = मिलकर जानते हुए, एकज्ञान होते हुए **भागम्** = भजनीय वस्तु को, अपने भाग को **उपासते** = उपासना करते, उपलब्धि करते रहे हैं।

विनय- हे मनुष्यो! सदा मिलकर चलो, मिलकर आचरण करो, मिलकर बोलो और तुम्हारे मन मिलकर सदा एक निश्चय किया करें। यह दैवी नियम है। देव लोग सदा 'संजानानाः' होकर-समान मन और ज्ञानवाले होकर ही-अपने कार्य-भाग को निबाहते आये हैं। असल में यह मनों द्वारा ज्ञान की एकता ही वास्तविक एकता है। मन की एकता होने पर वचन और कर्म (आचरण) की एकता होने में कुछ देर नहीं लगती। देखो, ये देव लोग सब जगह 'संजानानाः' होकर ही कार्य कर रहे हैं। आधिदैविक जगत् में देखो, अग्नि-वायु आदि देव जगत्-संचालन के लिए इकटठे होकर अपने-अपने भाग को ठीक-ठीक कर रहे हैं। अध्यात्म में प्राण-इन्द्रिय आदि देवों को देखो कि ये कैसे संगठित होकर जीवन को चला रहे हैं! पैर में काँटा चुभता है तो त्वचा-प्राण -मन-हाथ आदि सब देव एक क्षण में कैसा सहयोग दिखाते हैं! आधिभौतिक जगत् में भी सब ज्ञानी=देव-पुरुष पुराने काल से लेकर आज तक संगठित होकर ही बड़ी-बड़ी सफलताएँ प्राप्त करते रहे हैं। मिलना 'दैवी प्रवृत्ति है; क्षुद्र स्वार्थों को न छोड़ सकना और न मिलना आसुरी है, अतः हे मनुष्यो! तुम मिलो, अपने सेकड़ों क्षुद्र स्वार्थों को छोड़कर एक बड़े समष्टि-स्वार्थ के लिए सदा मिलो। लाखों-करोड़ों के मिलकर काम करने से जो तुम्हें बड़ी भारी सामूहिक सिद्धि मिलेगी, उससे फलतः तुम लाखों-करोड़ों में से प्रत्येक व्यक्ति के भी सब सच्चे स्वार्थ अवश्य सिद्ध होंगे। मिलने में बड़ी भारी शक्ति है। तुम मिलकर चलो, मिलकर करो तो कौन-सा कार्य असाध्य है! तुम मिलकर बोलो तो संसार को हिला दो और मिलकर ध्यान करने में तो अपार-अपार शक्ति है, अतः हे मनुष्यो! मिलो, मिलो! सब प्रकार से मिलकर अपने सब अभीष्ट सिद्ध... **साभार: वैदिक विनय**

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

टीपू देशभक्त था और वीर सावरकर ......?

देश में चुनाव सम्पन्न होने में अभी एक चरण बाकी है लेकिन कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र को जमीन पर उतारना शुरू कर दिया है। राजस्थान में वर्तमान कांग्रेस की सरकार ने स्वतंत्रता सेनानी विनायक दामोदर सावरकर से देशभक्ति का तमगा छीन लिया। सावरकर को देशभक्त नहीं बल्कि अंग्रेजों से माफी मांगने वाला बताया है। इससे कुछ दिन पहले जनवरी में महाराष्ट्र के नासिक की यशवंतराव चव्हाण ओपन यूनिवर्सिटी ने भी वीर सावरकर को हिंदुत्व विचारधारा वाला कट्टरपंथी आतंकवादी बताया गया था। इस किताब के एक अध्याय में दहशतवादी क्रांतिकारी आंदोलन में वीर सावरकर से लेकर वासुदेव बलवंत फड़के, पंजाब के रामसिंह कुका, लाला हरदयाल, रास बिहारी बोस जैसे क्रांतिकारियों के नाम शामिल थे।

अब इसे इस तरीके से भी समझ सकते हैं कि अब राजस्थान के बच्चे पढ़ेंगे कि सावरकर देशभक्त नहीं थे और अन्य राज्यों के बच्चों को पढ़ाया जायेगा कि सावरकर एक महान क्रन्तिकारी थे। या फिर अभी तक राजस्थान में जिस पिता ने यह पढ़ा था कि सावरकर क्रन्तिकारी थे अब उसके बच्चे पढ़ेंगे कि नहीं वह तो देशद्रोही थे। यानि हमारी आने वाली पीढ़ी अब राजनीतिक दलों द्वारा वोट के लालच में दिग्भ्रमित की जाएगी।

पिछले दिनों कांग्रेस ने वर्ष 2019 के आम चुनाव के लिए अपना घोषणापत्र जारी किया था। कांग्रेस ने इस घोषणापत्र को जनआवाज का नाम दिया था। इस घोषणापत्र में एक मामले को लेकर काफी विवाद भी हुआ था कि देश विरोधी बातें करना कांग्रेस की नजर में कोई अपराध नहीं है। क्योंकि कुछ दिनों पहले ही जे.एन.यू. में कांग्रेस की बौद्धिक खुराक में सहायक रहे वामपंथी कार्यकर्त्ताओं ने सीधे-सीधे देश के टुकड़े करने के नारे लगाये और कांग्रेस जिस तरह इनकी तरफदारी करती नजर आयी थी यह सब देश ने देखा था।

बहुत सारे लोग सोच रहे होंगे आखिर ऐसा क्या कारण है जो कांग्रेस पार्टी के लोग बार-बार सावरकर पर हमला करते हैं। शायद वह कारण है सावरकर द्वारा लिखी किताब जिसे सावरकर ने अंडमान से वापस आने के बाद लिखा था। इस पुस्तक का नाम है 'हिंदुत्व – हू इज हिंदू'। इस किताब में सावरकर ने हिंदुत्व की परिभाषा देते हुए लिखा कि इस देश का इंसान मूलतः हिंदू है। इस देश का नागरिक वही हो सकता है जिसकी पितृभूमि, मातृभूमि और पुण्यभूमि यही हो। यानि जिसके अराध्य देवों से लेकर तीर्थ स्थान तक इसी देश में हों वही इस देश का नागरिक हो सकता है। क्योंकि पितृ और मातृभूमि तो किसी की हो सकती है, लेकिन पुण्यभूमि तो सिर्फ हिंदुओं, सिखों, बौद्ध और जैनियों की ही हो सकती है। मुसलमानों और ईसाइयों की तो ये पुण्यभूमि नहीं है न उनके यहाँ पर तीर्थस्थान। सावरकर की इस राष्ट्रीय परिभाषा के अनुसार मुसलमान और ईसाई तो इस देश के नागरिक कभी हो ही नहीं सकते। बस यही वह लाइन है जो कांग्रेस की आंखों में खटकती है क्योंकि सावरकर की परिभाषा के अनुसार तो कांग्रेस के बड़े नेताओं का धर्म क्या है, सभी अच्छी तरह जानते हैं। इस कारण वे देश के नागरिक नहीं हो सकते।

असल में 1883 में जन्मे सावरकर 1948 में हुई महात्मा गांधी की हत्या के आठ आरोपियों में से एक बनाए गये थे। नाथूराम गोडसे और उनके भाई गोपाल गोडसे, नारायण आप्टे, विष्णु करकरे, मदनलाल पाहवा, शंकर किष्टैया, विनायक दामोदर सावरकर और दत्तात्रेय परचुरे। इस गुट का नौवां सदस्य दिगंबर रामचंद्र बडगे था जो सरकारी गवाह बन गया था। हालांकि सावरकर को गाँधी की हत्या के आरोप से बरी कर दिया गया था क्योंकि उन्हें दोषी साबित करने के लिए जरूरी सबूत नहीं थे।

लेकिन सावरकर की देशभक्ति पर सवाल उठाने वाले यह जरुर जान लें कि आजादी से पहले वे तीन अंग्रेज अधिकारियों की हत्या या इसकी कोशिश में शामिल थे। आजादी की लड़ाई के नजरिये से देखें तो ये हत्याएं अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने की सावरकर की क्रांतिकारी भावना दिखाती हैं।

यही नहीं लेखक धनंजय कीर सावरकर के जीवनीकार थे। उनकी लिखी किताब – 'सावरकर एंड हिज टाइम्स' 1950 में प्रकाशित हुई थी। सावरकर की मृत्यु के बाद कीर ने इसे फिर प्रकाशित करवाया। इसमें कई नई जानकारियों को शामिल किया गया है जो उन्हें खुद सावरकर से मिली थीं। इस नये संस्करण में कीर ने लिखा है कि अंग्रेज अधिकारी वाइली की हत्या के दिन सुबह सावरकर ने ढींगरा को एक रिवाल्वर दी थी और कहा था, 'यदि इस बार तुम असफल हुए तो मुझे अपना चेहरा मत दिखाना।'

सोचने की बात यह है भला जो इन्सान 25 सालों तक वह किसी न किसी रूप में अंग्रेजों का कैदी रहा उसकी देशभक्ति पर कैसा शक? दूसरा सवाल राजस्थान के शिक्षा मंत्री से भी है यदि सावरकर अंग्रेजो का दोस्त था तो अंग्रेज क्यों बार-बार जेल में डाल रहे थे? साथ ही राजस्थान कांग्रेस वे कारण भी जरुर बताये कि यदि 25 साल जेल काटने के बाद सावरकर देशभक्त नहीं हो सके तो मात्र कुछ साल जेल में रहे नेहरु जी किस लिहाज से देशभक्त और भारतरत्न हो गये?

इंग्लैंड में कानून की पढ़ाई के लिए रवाना होने से पहले सावरकर 'मित्र मेला' नामक एक गुप्त संगठन के सदस्य थे। इसी का नाम बाद में अभिनव भारत रखा गया। इस संगठन का लक्ष्य किन्हीं तरीकों से अंग्रेजी शासन को खत्म करना था। विनायक दामोदर सावरकर छत्रपति शिवाजी महाराज के अनुयायी थे। वे गांधी जी के विशुद्ध अहिंसा के सिद्धांत में विश्वास नहीं रखते थे। जैसे शिवाजी 1666 में आगरा से मिठाइयों के टोकरे में छुपकर मुगल कैद से फरार हुए थे, उसीसे प्रेरणा लेकर सावरकर ने भी 1910 में मोरिया नामक एक स्टीमर से पलायन किया था। जैसे ही स्टीमर मार्से के फ्रांसीसी तट के निकट पहुंचा, सावरकर ने उस पर मौजूद एक बड़े छेद में से निकल कर समुद्र में छलांग लगा दी और तैरकर किनारे पहुंचे थे।

लेकिन सावरकर की यह बहादुरी किसी ने नहीं देखी और वामपंथियों और छद्मवादियों ने सावरकर को बदनाम करने के लिए एक के बाद एक चाल चलते गये। ऐसा इसलिए कि यदि हम भारत के पिछले 120 वर्ष के इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे कि राजनीतिक अखाड़े में मुस्लिम रणनीतिकारों ने अलग-अलग बहाने से लगभग सभी हिंदू नेताओं को इतिहास से मिटा दिया और उन लोगों को नायक बना दिया, जिहोंनें इस देश को लहूलुहान किया था। इसी कड़ी में वामपंथी इतिहासकारों ने दक्षिण भारत के औरंगजेब-टीपू सुल्तान, जिसनें 700 मेलकोट अयंगर ब्राह्मणों को फांसी पर लटकाया था, को देशभक्त बना दिया और हिंदुत्व की बात करने वाले सावरकर को देशद्रोही।

देश के मार्क्सवादी इतिहासकारों ने सेकुलरिज्म का झूठा ढोंग कर टीपू को 'वीर' और 'देशभक्त पुरुष' के रूप में वर्णन किया है। सोचने की बात यह है भला जो इन्सान 25 सालों तक वह किसी न किसी रूप में अंग्रेजों का कैदी रहा उसकी देशभक्ति पर कैसा शक? दूसरा सवाल राजस्थान के शिक्षा मंत्री से भी है यदि सावरकर अंग्रेजो का दोस्त था तो अंग्रेज क्यों बार-बार जेल में डाल रहे थे? साथ ही राजस्थान कांग्रेस वे कारण भी जरुर बताये कि यदि 25 साल जेल काटने के बाद सावरकर देशभक्त नहीं हो सके तो मात्र कुछ साल जेल में रहे नेहरु जी किस लिहाज से देशभक्त और भारतरत्न हो गये? – *सम्पादक*

मेरे बच्चो को पादरियों से बचाओ

यह खबर अब कोई हैरान करने वाली नहीं है क्योंकि ऐसी खबरें अब भारत के किसी न किसी कोने से हर रोज का किस्सा बन चुकी है। अब झारखंड के खूंटी जिले में बीते साल हुए सामूहिक दुष्कर्म के एक मामले में खूंटी की जिला अदालत ने एक ईसाई पादरी और तीन अन्य लोगों को मंगलवार को दोषी करार दिया। खूंटी जिले के अक्री में 19 जून, 2018 को पांच लड़कियों के साथ सामूहिक दुष्कर्म हुआ था। पांचों लड़कियां सरकारी योजनाओं को लेकर लोगों में जागरुकता फैलाने के लिए नाटक में भाग लेने गई थीं। लेकिन पादरी द्वारा इन लड़कियों का अपहरण कर इनके साथ दुष्कर्म किया गया था।

अभी तक जो खबरें आती थीं ज्यादातर चर्च और ईसाई शिक्षण संस्थानों के अन्दर से आती थी लेकिन अब वासना के भूखे पादरी चर्च की चारदीवारी लाँघकर बाहर की दुनिया में भी अपने शिकार तलाश रहे हैं। एक किस्म से कहें तो भारत में दशकों से चर्च परिसर के भीतर ननों का यौन शोषण हो ही रहा था क्योंकि भारत की ननों की समस्या धुंधली थी। अभी तक कई ननों को लगता है कि शोषण तो आम है, इस समस्या पर ज्यादातर ननें तभी बात करती हैं जब उन्हें यह तसल्ली दी जाए कि उनकी पहचान छुपाई जाएगी।

लेकिन अब जो हो रहा है वह सब भारतीय समाज के लिए अच्छा नहीं है क्योंकि पिछले कुछ मामले उठाकर देखे जाएं तो सफेद चोंगों के अन्दर दया मानवता की प्रतिमूर्ति बताये जाने वाले पादरियों की जगह हवस के शिकारी दिख रहे हैं। मई 2016 में एक लड़की का सामूहिक बलात्कार किया गया और लड़की गर्भवती हो गई। इस लड़की का बलात्कार पादरी रोबिन वडाकूमचेरिल उर्फ मैथ्यू वडाकूमचेरिल ने कोट्टियूर के सेंट सैबेस्टियन चर्च में किया था। इसके बाद 2018 में केरल के मालंकारा सीरियन ऑर्थोडॉक्स चर्च के चार पादरियों पर 34 वर्षीय विवाहित महिला के चर्च के समक्ष कबूलनामे का इस्तेमाल करके उससे यौन शोषण किया था।

इसके दो महीने बाद पंजाब के जालंधर जिले के एक चर्च पादरी बजिंदर सिंह को महिला से रेप की शिकायत के बाद दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डे से गिरफ्तार किया गया था। इस पादरी द्वारा रेप घटना को अंजाम दिया गया था। यही नहीं साल 2017 में पटना में एक पादरी को रेप के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। पटना सिटी के रहने वाले चर्च के पादरी चंद्र कुमार पर दो महिलाओं का बलात्कार करने का आरोप था। यह पादरी चंद्र कुमार कई महिलाओं का धर्म परिवर्तन करा कर उनका यौन शोषण किया करता था। ऐसी दो महिलाएं जिनका धर्मान्तरण कर लगातार 6 महीनों से वह अपनी हवस का शिकार बना रहा था। इससे पहले साल 2014 में केरल के त्रिचूर में सेंट पॉल चर्च के पादरी राजू कोक्कन को 9 साल की बच्ची से रेप के केस में गिरफ्तार किया गया था।

इसके अलावा साल 2018 में पोक्सो कोर्ट, बोकारो की अदालत ने दुष्कर्म का प्रयास करने के आरोपी पादरी सुलेमान टोपनो को तीन वर्ष के सश्रम कारावास तथा 20 हजार रुपया जुर्माना की सजा सुनायी थी तो कुछ समय पहले एक नन ने 7 पृष्ठों के अपने पत्र में कहा था कि बिशप फ्रैंको मुलक्कल साल 2014 से 2016 के बीच उसका शारीरिक उत्पीड़न किया। साथ ही यह भी बताया कि वह किस-किस के पास मदद के लिए गई, लेकिन उसकी मदद के लिए कोई भी आगे नहीं आया। इसके बाद पीड़िता नन ने वेटिकन सिटी के पोप जो दुनियाभर में सबसे बड़े ईसाई धर्मगुरु हैं, से इस मामले में दखल देकर न्याय की गुहार लगाई थी। लेकिन पॉप ही क्या करता क्योंकि इससे कुछ दिनों पहले ईसाईयों के सर्वोच्च धर्मगुरु पॉप के 'लव लेटर्स' सामने आये थे। एक शादीशुदा महिला अन्ना-टेरेसा ताइमेनिका और पोप जान पॉल द्वितीय के बीच करीबी रिश्तों का खुलासा करने वाले लव लेटर्स से अखबारों की सुर्खियां बने हुए थे।

पर इसके बावजूद भी पॉप अपने लम्पट पादरियों के कारनामों के कारण दुनिया भर में माफी मांगते फिर रहे हैं। अधिकांश ऐसा माना जाता रहा है कि जब मनुष्य का मन भोग-विलास से भर उठता है तो वह अध्यात्म की ओर रुख करता है, उससे जुड़ता है। उसमें राग, मोह, भोग आदि चीजों का त्यागकर एक सरल जीवन जीता है जिसके भारत देश में बहुत सारे उदाहरण सुनने-देखने को मिलते हैं। लेकिन यदि ईसाइयत के अन्दर चर्चों के पादरियों को झांककर देखें तो लगता है जैसे इनके जीवन का उद्देश्य पूजा उपासना और आम जन को सही राह दिखाने के बजाय सिर्फ यौन शोषण ही मुख्य उद्देश्य रह गया हो।

पिछले दिनों बीबीसी की एक रिपोर्ट केरल की रहने वाली गीता शाजन चर्च से अपनी बेटी को सुरक्षित रखने की प्रार्थना कर रही थी। क्योंकि उनकी छोटी बेटी नन बनने के लिए पढ़ाई कर रही थी। गीता और उनके पति शाजन वर्गीस कोच्चि स्थित वांची स्क्वायर में खड़े थे। वहां नन और ईसाई समाज के कुछ लोग एक नन से बलात्कार के अभियुक्त बिशप की गिरफ्तारी की मांग करते हुए धरना प्रदर्शन कर रहे थे। तब गीता ने कहा था एक मां के तौर पर मैं अपनी बेटी के भविष्य को लेकर बहुत चिंतित हूं। एक समय में चर्च को सबसे सुरक्षित जगह मानती थी लेकिन लगता है कि यह सुरक्षित जगह नहीं है। अकेले भारत में ही नहीं, विश्व के कई देशों में पादरियों का काला चेहरा उजागर हुआ है। जर्मन कैथोलिक चर्च में 1946 से 2014 के बीच यौन उत्पीड़न के 3677 मामले दर्ज हुए तो आस्ट्रेलिया में 1980 से 2015 के बीच करीब 4,500 लोगों ने यौन शोषण होने की शिकायत दर्ज कराई थी।

असल में केरल समेत देश में ननों के उत्पीड़न से जुड़े बहुत से ऐसे मामले हैं, जो वर्षों से चर्च के दबाव में दबे पड़े हैं। ठीक से छानबीन होने पर इनकी सच्चाई देश के सामने आ सकती है। कुछ समय पहले ही कोल्लम जिले के पठनपुरम में 55 वर्षीया नन सुसन का शव कुएं से बरामद किया गया था। यदि चर्च के अंदर इस तरह महिलाओं का उत्पीड़न चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब भारत से धर्मान्तरण की सिमटती दुकान के साथ-साथ चर्च में सिर्फ पादरी रह जाएंगे, नन एक भी नहीं मिलेगी।

- राजीव चौधरी

.....बी.बी.सी. की एक रिपोर्ट केरल की रहने वाली गीता शाजन चर्च से अपनी बेटी को सुरक्षित रखने की प्रार्थना कर रही थी। क्योंकि उनकी छोटी बेटी नन बनने के लिए पढ़ाई कर रही थी। गीता और उनके पति शाजन वर्गीस कोच्चि स्थित वांची स्क्वायर में खड़े थे। वहां नन और ईसाई समाज के कुछ लोग एक नन से बलात्कार के अभियुक्त बिशप की गिरफ्तारी की मांग करते हुए धरना प्रदर्शन कर रहे थे।.....

प्रेरक प्रसंग

आर्यों को निकाल दो

लाला लाजपत राय के निष्कासन के दिनों की बात है। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने (तब महात्मा मुंशीराम थे) एक ऐतिहासिक भाषण दिया था। उसकी चर्चा उनके कई जीवन-चरित्रों में है, परन्तु पूरा भाषण सम्भवत: किसी ने नहीं दिया। सौभाग्य से मुझे यह ऐतिहासिक भाषण मिल गया है। भाषण क्या है, सिंह की दहाड़ व हुँकार है।

उसी ऐतिहासिक भाषण में स्वामी जी ने एक घटना सरकार के दमनचक्र की दी है। हरियाणा के एक ग्राम में डिप्टी कमिश्नर साहब गये। आसपास के नम्बरदारों, जैलदारों को बुलवाया गया। अंग्रेज साहब के बुलावे पर सब आ गये। साहब ने विशेष बात यह कही कि देखों, अपने-अपने ग्रामों में आर्य समाज को घुसने न देना। यदि कहीं कोई आर्यसमाजी है तो उसे ग्राम से निकाल दो। साहब को यह पता न था कि जिन चौधरियों से वह बात कर रहा था, उनमें अधिकांश आर्यसमाजी थे।

सूझबूझवाले एक चौधरी ने बड़ी नीतिमत्ता से कहा कि यदि हम किसी को ग्राम से निकालेंगे तो आपकी सरकार हमें ही दबाएगी। इसलिए साहब बहादुर आप ही इन आर्यों को हमारे यहाँ से निकालें। इसपर साहब बोले, ''नहीं, हम तो इन्हें नहीं निकाल सकते। आप निकालें, हम आपको कुछ न कहेंगे।''

इस पर वह आर्य चौधरी बोला- 'साहब जिन आर्यसमाजियों पर हाथ डालते हुए आपकी सरकार डरती है, हम उन्हें कैसे निकाल दें।' यह था आर्यसमाज का तेज। खेद है कि स्वामी श्रद्धानन्दजी ने उन चौधरियों का नाम वहाँ नहीं लिया। स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी उनके नाम बताया करते थे, हमें उनमें से केवल चौधरी जुगलाल का नाम ही याद है। शेष नाम स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी के लेखों में खोजने पड़ेंगे। आर्यों! आओ, प्रभु की वाणी वेद की विमल रचनाओं को सुनें व सुनावें और उस अतीत को फिर वर्त्तमान कर दें।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

जबर्दस्त भावना के अनुरूप त्याग, सेवा और भक्ति का सन्देश भारत को सुनाया। ऐसे सब महापुरुष समय-समय पर आकर जाति को नाश से बचाते और जीवन का मार्ग दिखाते रहे हैं।

भारतीय जागृति का नया युग

पूर्व और पश्चिम के सम्पर्क ने भारतीय जागृति का एक नया युग पैदा कर दिया। उन्नीसवीं सदी ने देश को कई ऐसे महान नेता दिये जिन्होंने अपने विचारों की शक्ति से देशवासियों के मन में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति उत्पन्न कर दी। परन्तु भारत पर अँगरेज़ों के प्रभुत्व और पाश्चात्य शिक्षा के प्रवेश के कारण यह खतरा उत्पन्न हो गया कि एक दिन देश का जीवन और दृष्टिकोण राष्ट्रीयता से शून्य हो जायगा। यह भी भय हुआ कि प्रतिक्रिया के तौर पर पुरानी रूढ़ियों और पद्धतियों के प्रति उत्पन्न अन्धी श्रद्धा न बन जाय। जाति के जीवन की ऐसी नाजुक घड़ी में अनेक महापुरुष कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हुए जिन्होंने देश को आत्मरक्षा का मार्ग दिखलाया। महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्थान उन महापुरुषों में बहुत ऊँचा है। महर्षि का मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्राचीन था।

परन्तु उस प्राचीनता में धर्म के रूप में प्रच्छन्न रूप से रहनेवाले खोखले रूढ़िवाद अथवा कुसंस्कारों का कोई स्थान नहीं था। महर्षि देशवासियों के सामने वेदों को हाथ में लेकर प्रगट हुए, और उन्होंने मत-मतान्तरों में बिखरे हुए मनुष्यों को मनुष्यमात्र की समानता के आधार पर बना हुआ वेदोक्त सामाजिक व्यवस्था का मार्ग दिखलाया।

परम सन्तोष की बात

नि:सन्देह यह परम सन्तोष की बात है कि महर्षि दयानन्द के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आर्यसमाजवालों ने इस ज्योति को किसी साम्प्रदायिक मन्दिर की अन्धकारमय कोठरियों में बन्द नहीं रखा। जिस शिक्षा को उन्होंने अपने लिए इतना अधिक जीवन-जागृतिपूर्ण समझा, उसे उन्होंने भारत की सभी भाषाओं में और आश्चर्यजनक बड़ी संख्या में पत्र तथा पुस्तक-पुस्तिकाओं को प्रकाशित करके अपने अन्य देशवासियों तक भी पहुँचा दिया। जिन देशभक्त कार्यकर्त्ताओं ने अपने महान आचार्य की परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए भारत के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अभ्युत्थान के लिए आत्मबलिदान कर दिया, उन्होंने नि:सन्देह एक समर्पित जीवन का यापन किया।

हिन्दूमात्र में एकता की स्थापना

आर्यसमाज की सबसे बड़ी सेवा यह है कि उसने जनता में वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय आत्मसम्मान की गम्भीर भावना, मन की चेतनता और देश की संस्कृति तथा सभ्यता के लिए प्रेम उत्पन्न करके हीनता की उस विषमय भावना का विनाश कर दिया जो कि मनुष्य को कायर बना देती है। इसी कारण से हम देखते हैं कि आर्यसमाज जनता को कर्म में प्रवृत्त करने के लिए निरे अपने प्राचीन गौरव के उपाख्यानों और वर्तमान कर्त्तव्य के सम्बन्ध में कोरे व्याख्यानों से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाता, वह मानव जीवन के अंगभूत उन क्षेत्रों को भी बलिदान प्रदान करता है जिन पर के हमारे भविष्य की स्थिरता अवलम्बित है।

आर्यसमाज ने बालकों और युवकों की शिक्षा को ऐसा बनाने का अत्यन्त प्रशंसनीय प्रयत्न किया, जिससे वह भारतीय आदर्शों तथा परम्पराओं के अनुकूल बन सके। आर्यसमाज का एक प्रशंसनीय कार्यक्षेत्र अस्पृश्यता-निवारण रहा है, जिसकी हिन्दू जाति के संगठन के लिए उपेक्षा नहीं की जा सकती। हिन्दूमात्र में एकता की स्थापना, उनके शारीरिक तथा आध्यात्मिक बल की अभिवृद्धि, उनकी सामाजिक स्थिति की उन्नति, उनमें सत्य और धर्म के प्रति अपार श्रद्धा की जागृति और उनको अपने अधिकारों के रक्षार्थ मर मिटने के लिए प्रेरित करना आर्यसमाज का मुख्य भाग रहा है। धर्म के क्षेत्र में आर्यसमाज ने अपना दरवाजा सदा खुला रखा है और अपने धार्मिक दृष्टिकोण की उदारता की घोषणा करके उसने न केवल दूसरों के आक्रमणों से हिन्दू धर्म की रक्षा की है, अपितु जो लोग मतान्तरों अथवा धर्मान्तरों के फेर में पड़कर भटक गये थे उन्हें पुन: हिन्दू धर्म में लाने का साहस भी प्रकट किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में अग्रणी सैनिक

आर्य समाज ने संगठित रूप से राजनीति में व्यावहारिक भाग कभी नहीं लिया, परन्तु उनके अनेक सदस्य देश की स्वतन्त्रता के संघर्ष में अग्रणी सैनिक रहे हैं। उसके माननीय संस्थापक ने अपने स्मरणीय ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में वैयक्तिक तथा राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलुओं पर विशेषत: भारतीय दृष्टि से विचार करते हुए, अपने देश की राजनीतिक दशा पर भी स्पष्टतम भाषा में अपना अभिमत प्रकट किया है। उन्होंने लिखा है-

"अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से, अन्य देशों पर राज्य करने की तो कथा ही क्या कहना, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है, दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दु:ख झेलना पड़ता है। कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तरों के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है। क्या हमारी राजनीतिक दासता का इससे अधिक विवाद तथा साहसपूर्ण विश्लेषण सम्भव है? फ्रांस के महान तत्त्वदर्शी रोमांरोला का यह कथन सर्वथा सत्य है कि महर्षि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य शरीर में अपनी दुर्द्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह पराक्रम से प्राण फूँक दिये हैं। भाग्य के आगे सिर झुका देनेवाली तथा निष्क्रिय जनता को उसने सावधान कर दिया कि "आत्मा स्वाधीन है और कर्म ही भाग्य का निर्माता है।"

अविनश्वर वसीयत

उत्कृष्ट आध्यात्मिक अनुमति के प्रभाव से श्री अरविन्द ने ऋषि दयानन्द के विषय में यह उद्‌गार प्रकट किये हैं -"ऋषि ने अपने देश के निवासियों तथा समस्त विश्व को 'सत्यार्थ प्रकाश' के रूप में जो अविनश्वर वसीयत दी है, वह उनकी प्रखर प्रतिभा का प्रतीक है। इस ग्रन्थ में वह हमारे सम्मुख एक उत्पादक, कलाकार, समीक्षक, संहारक तथा निर्माता के रूप में प्रकट हुआ है। वेदों में प्रतिपादित स्वाधीनता, समानता था सत्य के शाश्वत सिद्धान्तों में उसकी अविचल निष्ठा थी। वे अज्ञान, हठधर्मिता और मिथ्या विश्वासों के दुर्ग पर अविश्रान्त प्रहार करते रहे।"

अपने प्रगतिशील विचारों का साथ देने में असमर्थ, अपने देशवासियों के प्रभावशाली वर्ग के विरोध का उन्हें सामना करना पड़ता था। परन्तु वे अपने विश्वासानुमोदित सत्य मार्ग पर सदा अविचलित रहे और उन्होंने लक्ष्य के प्रति अपनी विमल निष्ठा और अविश्वास के प्रति अप्रतिहत साहस के साथ घोषणा की-"सत्य को सत्य के रूप में और असत्य को असत्य के रूप में प्रतिपादित करना ही सत्य का यथार्थ रूप है। असत्य को सत्य के तथा सत्य को असत्य के रूप में प्रकट करना सत्य का प्रकाशन नहीं है।"

ऋषि ने अपने महान दर्शन 'सत्यार्थ प्रकाश' में एक ऐसे पुनर्गठित समाज का रूप उपस्थित किया है जिससे स्वतन्त्र भारत वर्तमान परिस्थितियों तथा अवस्थाओं में स्वकीय संस्कृति तथा सभ्यता की अमूल्य परम्पराओं के साथ समस्वर करके ही निर्माण कर सकता है।

आज मुस्लिम लीग यह माँग कर रही है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' को जब्त कर लिया जाय, क्योंकि इसके कुछ अंश कुछ मुसलमानों की दृष्टि में आपत्तिजनक हैं। अब यह सोचना आपका काम है कि ऐसी अनुचित और दुष्टतापूर्ण असहिष्णुता के प्रतिकार के लिए क्या उपाय किये जाँय, वस्तुत: यह आन्दोलन ही स्वयं सत्य, साहस और विवेक के विचारों से परिपूर्ण उस ग्रन्थ को अधिकाधिक लोकप्रिय बनाने में सहायक होगा, जिसने लाखों आत्माओं को शक्ति व मुक्ति प्रदान की है और इस प्रकार इस ग्रन्थ में जीवन्मुक्ति के उस भारतीय महालक्ष्य की सिद्धि में सहायता दी है जिसके लिए उसके प्रणेता ने अपना जीवन लगाया और प्राणों की भी आहुति दी।

आर्यसमाज के अनुयायियों के दृढ़ निश्चय को जानते हुए ही मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि यदि हमारे धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप करने का कोई भी दुष्प्रयत्न किया गया तो उसे परिणाम की चिन्ता किये बिना साहस और संगठित प्रतिरोध के बल पर छिन्न-भिन्न कर दिया जायेगा। मैं तो यहाँ तक कहने को तैयार हूँ कि सम्पूर्ण हिन्दू जाति और उनके सम्प्रदाय वस्तुत: धार्मिक मत-वादों के रहते हुए भी सभी विचार स्वातन्त्र्यप्रेमी ऐसे हमले को चुनौती के रूप में स्वीकार करेंगे। हमें मुस्लिम लीग द्वारा की गई ऐसी बेहूदी माँग के कारणों को नहीं भुला देना चाहिए, इसका कारण जहाँ एक ओर हमारे आपसी मतभेद और अपने पवित्र धर्मग्रन्थों आदि के प्रति उपेक्षा का भाव है, वहाँ दूसरी ओर भारतवर्ष को गुलाम बनाए रखने के लिए हमारे शासकों द्वारा प्रजा के एक भाग से पक्षपात करने की दुर्नीति भी है।

सबसे बड़ा सवाल

आज भारत के सामने सबसे बड़ा सवाल देश की राजनीतिक स्वतन्त्रता-प्राप्ति का है। इसके बिना हमारे सिद्धान्तभूत अधिकारों और परम्पराओं पर आश्रित किसी भी सामाजिक और आर्थिक नवनिर्माण की व्यापक योजना को मूर्त्त रूप देना असम्भव है। मैं यहाँ क्षणभर के लिए भी हिन्दू जाति के सभी वर्गों और श्रेणियों में सामाजिक एकसूत्रता की आवश्यकताओं का महत्त्व कम नहीं करता। यह कार्य जनता का रहन-सहन और दृष्टिकोण ऊँचा उठाने तथा सम्पूर्ण कृत्रिम बाधाओं का समूलोच्छेद कर डालने के लिए बड़े कठोर व व्यवस्थित परिश्रम द्वारा ही हो सकता है। मैं यह भी कहूँगा कि हिन्दुओं में ऐसी एकता यथासम्भव इस देश में रहनेवाली सब जातियों के साथ न्याय व सम्मानपूर्ण सौहार्द भावना के साथ ही प्रकट होनी चाहिए, ऐसी वास्तविक और स्थायी सौहार्द भावना होने से पहले कुछ सैद्धान्तिक शर्तें पूरी हो जानी आवश्यक है। आज यह निर्विवादरूपेण सिद्ध हो गया है कि ब्रिटिश शासकों द्वारा उद्‌घोषित सिद्धान्त चाहे कुछ भी हो, वे वास्तविक शासन-सत्ता को भारतीयों के हाथों सौंपने और इस प्रकार अपने साम्राज्य के सबसे कीमती भाग को खोने के लिए तैयार नहीं हैं। इसीलिए उन्हें भारतीय जनता के विभिन्न दलों में फूट की प्रवृत्तियों को बढ़ाने और कृत्रिम रूप से ऊँचा उठाये हुए निहित स्वार्थों का महत्त्व जताने में अपना फायदा दीखता है। इसके साथ ही उन्हें कठोर दमन नीति का अनुसरण करने और अपने निरंकुश स्वेच्छाचारितापूर्ण शासन का वैध विरोध भी कुचल डालने में अपना अभीष्ट सिद्ध होता दीखता है।

एक भारत-अखण्ड भारत

नये विधान में भारत की एकता-अखण्डता का कायम रहना बड़ी आवश्यक बात होगी। पाकिस्तान योजना के आविष्कर्त्ता ही यह बात सबसे अधिक अच्छी तरह समझते हैं कि उनकी योजना तर्क और व्यवहार से कोसों दूर है। हिन्दुओं को, जो कि भारत की आबादी का तीन चौथाई भाग है, मुस्लिम लीग देश का विधान तैयार करने का हक देने को तैयार नहीं। वह तो यह भी नहीं चाहती कि भारतभर के हिन्दू और मुसलमान देश के विधान का संयुक्त रूप से निश्चय करें। दोनों ही अवस्थाओं में, उसका कहना है कि इस प्रकार अल्पसंख्यकों पर बहुसंख्यकों का अत्याचारपूर्ण शासन हो जायगा। इसके साथ ही उसका दावा है कि जिन प्रान्तों में मुसलमानों का प्रबल बहुमत है, वहाँ वे स्वयं करोड़ों अल्पसंख्यक हिन्दुओं के भाग्यविधायक बन जायेंगे और वहाँ के हिन्दू आत्मनिर्णय के अधिकार की माँग न करने पायेंगे। उस अवस्था में यह अल्पसंख्यकों का अन्यायपूर्ण शासन नहीं होगा, अपितु यह मुसलमानों द्वारा पृथक् मातृभूमि पाने के सिद्धान्त व अधिकार का प्रयोग होगा। भारतवर्ष राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से एक है और वह अखण्ड रहेगा। यदि कोई इस एकता में बाधा डालना चाहेगा तो वह देशद्रोह के महापराध का दोषी होगा और उसका कितनी भी कीमत चुकाकर मुकाबला किया जाएगा। मुस्लिम लीग देशभक्त सन्तानों के बहुमत के संगठित प्रतिरोध के विरुद्ध अकेले ही भारतभूमि को खण्ड-खण्ड करने में सफल नहीं हो सकती। ब्रिटेन भी अपनी तलवार से

- *जारी पृष्ठ 6 पर*

नफरत क्यों होती है?

प्रेम और नफरत दुनिया की दो ऐसी भावनाएं है जिनकी जकड़ से इन्सान कभी मुक्त नहीं हो सकता। दोनों एक मन की ऐसी अवस्था हैं जिससे इन्सान को जीवन में अनेकों बार गुजरना पड़ता है। यदि हम प्रेम की बात करें तो इस विषय पर शायद संसार में सबसे ज्यादा लिखा गया और पढ़ा गया किन्तु नफरत पर बहुत कम ध्यान दिया गया। आखिर नफरत क्या है? यह भावना मन में किस स्थिति में उपजती है? यह प्रश्न अवश्य ही मन में कई बार उठता है। वैसे देखा जाये तो प्रेम का अंत नफरत है लेकिन इसका एक कारण और भी है। हम अक्सर उन लोगों से नफरत करते हैं जो हमारे से अलग हैं।

इसमें भय का सिद्धान्त भी काम करता हैं हालाँकि गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि भय बिना होय न प्रीति। किन्तु मेरा तर्क इसके उलट है अक्सर हम जिन लोगों से डरते हैं बाद में उन्हीं लोगों से नफरत करने लगते हैं। व्यावहारिक शोधकर्ताओं की मानें तो जो लोग दूसरों के प्रति नफरत करते हैं, वे खुद भीतर से डरते हैं। यानि कुछ इस सिद्धान्त के साथ कि मैं भयानक नहीं हूं पर आप हैं।

असल में हम अपने जीवन को एक पद्धति के अनुसार विकसित कर लेते हैं। अपनी सीमाओं में सोचते है, अपनी सीमाओं में देखते और समझते हैं। मन और मस्तिष्क का यह दायरा मजबूत होता चला जाता है। यह एक धारणा बन जाती है। जब हमारे जैसी धारणा के लोग हमें मिलते हैं तब हम आत्ममुग्ध होकर एक-दूसरे की इस धारणा को बल प्रदान करते हैं। इस भाव को प्रेम भी कह सकते हैं और मित्रता और स्नेह भी। पर जब कोई पारिवारिक या बाहरी व्यक्ति हमारी इन धारणाओं पर चोट करता है तब मन विचलित होने लगता है क्योंकि हमने बड़ी मेहनत से एक धारणा को विकसित किया था और उस धारणा का विखंडन सहन नहीं कर पाते।

इसे इस तरह समझ सकते हैं कि जब हम स्वयं का अस्वीकार्य हिस्सा पाते हैं, तब हम खतरे से बचाव के लिए दूसरों पर हमला करते हैं। जब तक हमारे पास बदले में देने के लिए शब्द हैं, शब्दों से हमला करते है जब शब्द समाप्त होते हैं तब हमला शारारिक हो जाता है। इतिहास ऐसे अनेकों उदाहरण भी समेटे हुए हैं। इसमें स्वामी दयानन्द सरस्वती और सुकरात को जहर दिए जाने की घटना के साथ महात्मा बुद्ध के ऊपर थूका जाना आदि है। इन सबने लोगों की धारणाओं पर हमला किया था बदले में लोगों ने अपनी धारणा बचाने के लिए इन पर हमला किया था।

नफरत का जो दिखावा असहायता, शक्तिहीनता, अन्याय और शर्म की भावना जैसी भावनाओं से खुद को विचलित करने का प्रयास है। दूसरा नफरत एक ऐसी भावना का हिस्सा है जो हमारे परिवार से लेकर इतिहास और हमारे सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास का भी हिस्सा है। हम युद्ध संस्कृति में रहते हैं जो हिंसा को बढ़ावा देती है, जिसमें प्रतिस्पर्धा है इसे जीवन का एक तरीका भी समझा जाता है। हमें दुश्मन से नफरत करने के लिए सिखाया जाता है। जिसका मतलब है कि हमारे से अलग कोई भी है जो हमारी विचारधारा से अलग है, सीमाओं से अलग वह नफरत का पात्र है।

हम सभी आक्रामकता और करुणा की क्षमता से पैदा हुए हैं। हम कौन-सी प्रवृत्तियों को गले लगाते हैं, यह हमारे ऊपर निर्भर करता है। नफरत पर काबू पाने की कुंजी है - आत्मावलोकन। अर्थात् जब भी किसी के प्रति नफरत का भाव पैदा हो हमें आत्मावलोकन करना चाहिए कि आखिर मेरे अन्दर इसके प्रति नफरत का भाव क्यों है? क्या किसी प्रकार का भय है या मेरी क्षमता इससे कम है? उपेक्षा का भाव है या कोई अन्य कारण, यह चर्चा मन में हो और इसके बाद हो सके उक्त व्यक्ति से चर्चा जरुर करें। दूसरा है शिक्षा घर में स्कूलों में, और समुदाय नफरत ईर्ष्या या भी हिंसा जैसे विषयों पर विद्यार्थियों को सिखाया और पढ़ाया जाना चाहिए।

हमें समझना होगा यह व्यावहारिक अभिव्यक्तियां हैं और जब हम इनके करीब होते हैं। हम एक तनाव में भाग जरुर लेते हैं। क्योंकि भावनाएं जीवन के हर एक पल को प्रभावित करती हैं। इससे ही व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र बनते बिगड़ते आये हैं तो बेहतर होगा हमें गणित विज्ञान जैसे विषयों के साथ भावनाओं को समझें। ऐसे विषयों को समझना और समझाना पड़ेगा कि आखिर नफरत क्यों होती है और कैसे इसका अंत किया जा सकता है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान निर्वाचन सम्पन्न

श्री विजय सिंह भाटी जी पुनः सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की आम सभा दिनांक 14 मई, 2019 को सभा कार्यालय राजापार्क जयपुर में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर निर्वाचन अधिकारी श्री रामपाल विद्या भास्कर, श्री धर्मवीर सिंह एवं श्री ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति जी की देखरेख में सम्पन्न हुए निर्वाचन में श्री विजयसिंह भाटी जी को पुनः सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर मन्त्री : श्री देवेन्द्र कुमार शास्त्री जी, **कोषाध्यक्ष :** डॉ. सन्दीपन कुमार जी एवं **श्री अशोक कुमार शर्मा जी को पुस्तकाध्यक्ष** के रूप में निर्वाचित घोषित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

आचार्य अंशुदेव पुनः प्रधान एवं दीनानाथ वर्मा मन्त्री निर्वाचित

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन एवं त्रैवार्षिक निर्वाचन दिनांक 12 अप्रैल, 2019 को आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर के नवनिर्मित भवन ए-164, कमल विहार सै.-6, रायपुर में सम्पन्न हुआ। इस त्रैवार्षिक निर्वाचन में आचार्य अंशुदेव जी को सर्वसम्मति से पुनः प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर **श्री दीनानाथ वर्मा जी को पुनः मन्त्री एवं श्री चतुर्भुज कुमार आर्य को कोषाध्यक्ष** के रूप में निर्वाचित घोषित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आचार्य अंशुदेव जी
प्रधान

श्री दीनानाथ वर्मा जी
मन्त्री

श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

पं. सत्यवीर शास्त्री पुनः सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ का त्रैवार्षिक चुनाव 5 मई, 2019 को आर्यसमाज सी.ए. रोड नागपुर में सम्पन्न हुआ। इस त्रैवार्षिक निर्वाचन में पं. सत्यवीर शास्त्री जी को पुनः प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर **उप प्रधानः** प्रा. अनिल कुमार शर्मा, जयसिंग गायकवाड, **मन्त्री :** श्री अशोक यादव, **उप मन्त्रीः** सर्वश्री देवी प्रसाद आर्य, कृष्णलाल विदानी आर्य, हरिदत्त जुमले, मयंक चतुर्वेदी एवं **कोषाध्यक्ष** के रूप में श्री घनश्यामदास रेवतानी जी को निर्वाचित घोषित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

श्री पं. सत्यवीर शास्त्री जी
प्रधान

श्री अशोक यादव जी
मन्त्री

श्री घनश्यामदास रेवतानी जी
कोषाध्यक्ष

Why Modern-day Education Institutions Are Turning Into Cemetery?

There was a time wherein the students' quarrels, either the pages of the notes were torn down or any button or hook of the school dress was broken. As a result, the punishment was given to all or both of them in the school and also separately at home. But today it is not so, if you see the news reports, then the result of the mutual conflict in schools is being seen as exaggerated as murder, violence and therefore the parents are seen frequently visiting the court due to commission of crime by their children.

Seeing the latest incident of the murder of a twelve-year-old boy in a boarding school in Dehradun has once again besprinkled the blood stains on the clothes of the school which is called temple of education. This brutal episode of murder has also put the school management under questions. Student of the seventh grade Vasu Yadav was beaten to death by two 12th class students using their cricket bat and it is again surprising that the school administration buried the body of the child within the premises itself without telling to anyone not even informing the parents! This incident has raised a question on the safety of the children studying in the schools.

Analyzing some other recent events the dead body of a fifteen years old student Vaibhav, was found in the bathroom of the first floor of Jeevan Jyoti School, Krawal Nagar, Delhi. In January 2018, a student studying in Class VIII - Ritesh Sharma, a 7-year-old student of the first class in Lucknow, was injured seriously by stabbing in his chest and stomach in the toilet of the school by a 12-year-old girl studying in the fourth standard of the same school. Meanwhile, some students of a government school in Delhi's Jyoti Nagar area had beaten and killed a class 10th student. Who would be unaware of the well-known Pradyumna massacre in the Ryan Interna-tional School, Gurugram, adjacent to Delhi? After that, if we look in the other areas of the country, an 18-year-old student was stabbed 31 times with a knife and killed in Vadodara city, Gujarat. On July 21, Ankush, another 18-year-old student of class 12 in Peelu Kheda town of Jind district, was harshly stabbed by some of his fellow students which led to his death the next day. There are several such incidents which occur in the country, and it points towards the trend of violence which has been arising in the mindset of the school students, and these incidents are a bellwether for the society.

In all such cases, citing the mutual conflict between the student as the reason for the killing, the police completed their report and made an arrest of the students involved in these murders ending up by sending them to jail. But after all, the story repeats again with the same thing and the same question persists that after all the schoolchildren are expressing these violent behaviours? The disputes that can be resolved through mutual dialogue are being solved through murder or violence. So far, such cases were heard only in the western countries, especially in the states of America. Children born in a gun culture, continue to carry out the firing incidents in schools when their little interest hits them. Last year, in the firing in Florida, 17 people, including 14 students, were killed and at least 10 students were killed in another violent incident happened in a high school in Texas.

Now the question arises that why this has started happening in our country, how is this violence buddingin in the children suddenly? If you try to find the answer to this question, then you will two major reasons. First is that the management of today's modern schools or institutions is more interested in their own profit making. They just create a sense of competition within the children but are unable to teach the values, ethics, and education in this competition.

Because of this, in the race to win and come forward, there are usually instances of jealousy in the students, which often turn violent. The second reason is to note whether smartphone or TV are behind the violence! Because the video games in which there is a lot of ruckus or beat-fisted films, also creates a deep impact on the minds of the children and they often start thinking of themselves as the heroes of video games. Another reason is the environment of the house, in which the father is to beat the mother or the children. Many times, some of the parents use violence to communicate like slapping, kicking, etc. In such a situation, the perception goes in the mind of the children that the use of violence is the right way and that by doing so, they fulfill their ego. Conscquently, children obviously learn whatever they see in thier household. If you put them in creative activities, their mind set will be creative and non desctructive. Do not pay attention just to their studies only, teaching the curriculum will not help children growing morally. His quality will be indged from the education provided by high moral teachers. The school should be the temples of rightful learning, decent conduct , good beheaviour, etimes, high moral velue, fellow fulang, respect to elders. The childern should be cought at young age and kept underwatch by the perents and devoted teachers. It is th joint responsiblity of the perents and the teachers to eliminate the growing violance cult in the students.

- Vinay Arya, Gen. Sec. DAPS

पृष्ठ 4 का शेष

भारतमाता का अंग-भंग करके उसके टुकड़े, देश का विभाजन करने के इच्छुकों के आगे, डालने की 'गारण्टी' नहीं दे सकता। किन्तु आज जिन प्रान्तों में हिन्दू अल्प संख्या में हैं और ब्रिटिश नीति प्रत्यक्षत: पाकिस्तानी राज को बढ़ावा देने की है, उन प्रान्तों में हिन्दुओं के अधिकारों और हितों को तुच्छ साम्प्रदायिकता और अवसरवादिता की बलिवेदी पर चढ़ाया जा रहा है।

वार्ता का मार्ग खुला है अब भी

भारतीय जनता की और मुसलमानों की ही भलाई के प्रति मुस्लिम लीग की चिन्ता-विषयक संजीदगी और निष्कपटता की परख के लिए हमने बारम्बार अपने मतभेद भुला डालने यानी विधान-सम्बन्धी सब विवादास्पद प्रश्नों को युद्ध के बाद तक स्थगित कर देने और भारतीय राष्ट्र की रक्षा तथा उसके पुनरुद्धार के लिए उसके अमित प्राकृतिक साधनों का उपयोग करने हेतु तत्काल शासन-सत्ता के सौंपे जाने के लिए संयुक्त माँग करने के प्रस्ताव पेश किये। बातचीत का मार्ग अब भी खुला है, पर हमारे शासकों द्वारा प्रतिक्रियावादियों को अपनी राष्ट्रविघाती और स्वार्थपूर्ण माँगों को प्रस्तुत करने में प्रोत्साहन देने के निर्लज्जतापूर्ण रवैये को देखते हुए ऐसे किसी मेलमिलाप की आशा बालू में से तेल निकालने के समान ही है।

आज इसका इलाज यह है कि भारत की आज़ादी की माँग से सहमत सब दलों और वर्गों का देशव्यापी प्रतिरोध गठित किया जाए। हमें उनलोगों या पार्टियों की खुशामद करने या उनके आगे-पीछे फिरने से कोई फायदा न होगा, जो कि भारत की प्रगति व स्वाधीनता की परवाह नहीं करते और देश को गुलाम बनाए रखने के लिए अपने शासकों के हाथों की कठपुतली बन रहे हैं। कुछ ऐसे भी दल और वर्ग हैं जो स्वत: छोटे व नगण्य होते हुए भी संयुक्त हो जाने पर मजबूत और ताकतवर हो सकेंगे, ये स्वतन्त्र भारत का विधान तैयार करने के आधारभूत सिद्धान्त के लिए देशव्यापी विरोधी मोर्चे में सम्मिलित होकर अच्छा काम कर सकेंगे। ऐसे संगठन का कर्त्तव्य होगा कि वह राष्ट्र के पुनर्निर्माण विषयक अधिकतम सहमति के प्रश्नों को महत्त्व दिलायें, सहिष्णुता व पारस्परिक सौहार्द भावना पर बल दें तथा हमारे नागरिक, आर्थिक व राजनीतिक अधिकारों के अपहरण करने के प्रयत्नों का निर्भीकतापूर्वक मुकाबला करें।

मतान्ध उत्साह के विरोध में

आज हमारे देश में अकर्मण्यता और निराशा का बोलबाला है। भारत में इस समय कानून का राज नहीं है। वर्तमान युद्ध-स्थिति का पूरा लाभ उठाकर विदेशी नौकरशाही की पाशविक प्रवृत्तियों ने राष्ट्रीय भावना का गला घोंटने का काम विविध रूपों में किया हुआ है। दुर्भिक्ष और महामारियों ने 6 महीने से भी कम समय में 20-30 लाख से भी अधिक मनुष्यों को परलोक पहुँचा दिया है। ये लोग एक सभ्य सरकार के ही राज्य में भोजन, दवा और आश्रय के अभाव में प्राणों से हाथ धो बैठे। यदि मौजूदा दिवालिया, रिश्वतखोर और साम्प्रदायिक मन्त्रिमण्डल को अगले महीनों में शासन चलाने दिया गया तो मेरे प्रान्त (बंगाल) में ऐसा ही संकट 1944 में फिर देखने का अवसर आ सकता है। यदि किसी दूसरे देश में ऐसी बदइन्तजामी होती तो वहाँ की जनता खुली बगावत करती। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि ब्रिटिश भारत के इतिहास में इतना अधिक असन्तोष कभी नहीं हुआ जितना कि आज विद्यमान है।

मैं निराशा की बात कहकर समाप्त करना नहीं चाहता। हमें हिन्दुओं में ही अनेक भेद-प्रवृत्तियों का अन्त करना है। हमें भारत के विभाजन की माँग के बाद निरन्तर बढ़ते हुए मतान्धतापूर्ण उत्साह के विरुद्ध लड़ना होगा। हमें हिन्दू शक्ति और देश के सार्वजनिक जीवन के राष्ट्रीय अंश का निरन्तर ह्रास करने में तत्पर शासक वर्ग के प्रत्याघाती से जाति की रक्षा करनी होगी।

स्व-शासन: भारत का पुरातन अधिकार

हमारे सामने जो काम है वह कठिनाइयों और निराशाओं से परिपूर्ण है। क्या इतिहास में तुच्छ भिखमंगों की दशा में सुख माननेवाली और थोड़ी-सी क्षणिक प्राप्ति के लोभ में अपनी मान-मर्यादा की बलि देनेवाली किसी गुलाम जाति ने कभी आज़ादी प्राप्त की है! भारतीय इतिहास में हमें ऐसे यथेष्ट प्रमाण उपलब्ध होते हैं कि यहाँ की प्रत्येक सन्तति (जाति) के मनुष्यों में ऐसे मानव हुए हैं, जिनकी तुलना किसी भी देश और स्थान के महान पुरुषों से सुगमतापूर्वक की जा सके। पर भारतीय जनता किसी मूल्य पर अपनी राजनीतिक स्वाधीनता की रक्षा के लिए तीव्र भावना से अनुप्राणित नहीं हुई। इसलिए भारत के राजनीतिक और अन्य दलों के नेताओं के आगे, राष्ट्रीय संगठन की उदात्त भावना के साथ, यह प्रमुख कार्य है कि वे स्वाधीनता के प्रेम को कोने-कोने तक फैला दें, जनता जान जाए कि स्व-शासन भारत का पुरातन अधिकार है और यहदृढ़ निश्चय उसमें घर कर जाए कि यदि आज़ादी नसीब नहीं होती तो जिन्दगी मौत बराबर है।"

हम जनता से मर्मस्पर्शी अपीलें करके अथवा अपने विरोधियों को गालियाँ देकर अपने लक्ष्य पर नहीं पहुँच सकते। इसके लिए तो हमें सामाजिक व आर्थिक उत्थान का कार्यक्रम अमल में लाते हुए धर्म को मानवीय सभ्यता के उत्कर्ष के लिए सच्चा संगठनात्मक तत्त्व बनाना होगा, इसी की मजबूत नींव पर भारत की स्वतन्त्रता का निर्माण हो सकेगा। हमें इस दृढ़ विशवास से बल पाकर उत्साहपूर्वक कार्य करना चाहिए कि शक्ति, अधिकार, साम्राज्य और प्रभाव से शासित संसार में अपने प्राचीन गौरव के अनुरूप यह प्रतिष्ठा भारत को ही प्राप्त होगी कि वह न केवल एक पददलित और शोषित जाति के पुनरुद्धार के लिए उच्चतर और उत्कृष्टतर सभ्यता के विकास में हाथ बँटाये बल्कि तन, मन और आत्मा के सह-भाव की ओर प्रगति का भी बीड़ा उठाये। इसके बिना स्थायी शान्ति और स्वतन्त्रता सभ्य संसार के किसी भी कोने में स्थिर नहीं हो सकती।

- साभार -

'कश्मीर की वेदी पर' पुस्तक से

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

24 मई से 2 जून 2019 गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरि.)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन वार्षिक चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर 24 मई से 2 जून, 2019 तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरियाणा) में आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

38वां वैचारिक क्रान्ति शिविर

समापन समारोह

26 मई प्रात: 10 बजे : मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

निवेदक **महाशय धर्मपाल** प्रधान | **धर्मपाल गुप्ता** व.उ. प्रधान | **जोगेन्द्र खट्टर** महामन्त्री (9810040982) | **योगेश आर्य** कोषाध्यक्ष

अत्यावश्यक सूचना : यज्ञ पर शोध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि यज्ञ की विधि और उसकी वैज्ञानिकता पर अधिक शोध किया जाए। इसके लिए यज्ञ और उसकी वैज्ञानिकता में रुचि रखने वाले अथवा कुछ शोधकार्य कर चुके या करने की इच्छा करने वाले आर्यजन अपने नाम, मोबाईल नं. और ईमेल आईडी भेजने की कृपा करें। जिनके पास पहले से ही विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा किये गये शोध के कुछ परिणाम हों अथवा प्रकाशित लेख हों उनकी प्रति भी यथाशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आगामी शोध कार्य आर्य समाज स्थापना दिवस के दिन से आरम्भ किया जाने का प्रस्ताव है अत: उपर्युक्त जानकारी शीघ्रातिशीघ्र सभा कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें। **-ईश कुमार नारंग, संयोजक, 9911160975**

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 Email : aryasabha@yahoo.com

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2009 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2029 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 2 जून से 16 जून 2019

स्थान : गुरुकुल शिवालिक अलियासपुर अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। **प्रवेश शुल्क : शाखानायक : 500/-रुपये, उप व्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक के लिए 600/- रुपये है** (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए संयोजक श्री रविन्द्र सिंह 9991700034 से सम्पर्क करें।

- सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, 9414789461

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्त्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

31 मई से 9 जून,19 : महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, अजमेर (राजस्थान)

शिविरार्थी की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। ★शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 30 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। ★ सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 31 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य करा लें। शिविर में शिक्षिका, सह शिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगाई जाएंगी। परीक्षा में उत्तीर्ण आर्य वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।

- ***साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका, 9672286863***

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 19 मई से 26 मई 2019, आर्य कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली

शिविरार्थी की आयु 11 वर्ष से अधिक हो। ★ शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 19 मई को प्रात: 11 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। शिविर शुल्क 400/- रुपये है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372

शोक समाचार

श्री वीरेन्द्र सरदाना जी को मातृशोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मन्त्री, पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल के महामन्त्री एवं दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर के चेयरमैन श्री वीर वीरेन्द्र सरदाना जी की पूज्य माताजी श्रीमती तारावन्ती जी का 96 वर्ष की आयु में 8 मई, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ मोहन नगर (कुरुक्षेत्र) स्थित शमशान घाट में किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 11 मई को महेश्वर हनुमान मन्दिर सै. 13 कुरुक्षेत्र में सम्पन्न हुई जिसमें उनके निजी परिवार के साथ-साथ निकटवर्ती आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

डॉ. दयानन्द आर्य जी का निधन

आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली के पूर्व प्रधान एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री डॉ. दयानन्द आर्य जी का दिनांक 10 मई, 2019 को निधन हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सागरपुर स्थित शमशान घाट पर किया गया।

स्वामी अरण्यमुनि जी का निधन

आर्यजगत के मूर्धन्य वैदिक विद्वान स्वामी अरण्य मुनि जी महाराज (वैदिक मुनि आश्रम, चुडियाला, रुढ़की) का 10 मई, 2019 को निधन हो गया। वे भजनोपदेश द्वारा तथा स्वाध्याय के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करते थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ उनके जन्म स्थान गांव टिकोला कला में सम्पन्न हुआ।

श्री पूनमचन्द शास्त्री जी का निधन

आबू पर्वत निवासी गुरुकुल झज्जर, यमुनानगर के स्नातक एवं सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ शिक्षक श्री पूनमचन्द शास्त्री जी का 13 मई की रात्रि में हृदयघात से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 14 मई को पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 13 मई, 2019 से रविवार 19 मई, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 16-17 मई, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 15 मई, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौन्धा देहरादून द्वारा आयोजित

योग-साधना एवं स्वाध्याय-शिविर

दिनांक : 27 मई से 31 मई 2019 तक

स्थान : श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)

'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' (तैत्तिरीयोपनिषद्-१/११) अर्थात् स्वाध्याय से प्रमाद (आलस्य) नहीं करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने प्राचीन आर्ष परम्परा को उद्धृत करते हुए सभी आश्रमों में ईश्वरोपासना एवं स्वाध्याय की परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखने का निर्देश किया है। वर्तमान में स्वाध्याय व ईश्वरोपासना से विमुख होने से अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। उपनिषद् के निर्देश का अनुपालन करते हुए दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा एवं श्रीमद् दयानन्दार्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई, 1, 2 जून 2019 को आयोजित होने वाले श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून के 19 वें स्थापना दिवस एवं वार्षिकमहोत्सव के शुभअवसर पर योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन 27 मई से 31 मई 2019 तक किया जा रहा है। इस शिविर में पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के मार्गदर्शन में योग-साधना का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा स्वाध्याय शिविर के आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी (मुम्बई) होंगे। पिछले वर्षों में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रकरण का अध्ययन किया गया। इस सत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत पंचमहायज्ञविधि का अध्ययन कराया जायेगा। शिविर में शुद्ध-मन्त्रोच्चारण, मन्त्रों के अर्थ, पंचमहायज्ञविधि की अनिवार्यता आदि विषयों पर चर्चा-परिचर्चा की जायेगी।

आप सपरिवार इष्ट मित्रों के साथ अधिक से अधिक संख्या में स्वाध्याय एवं योग-साधना शिविर में सादर आमन्त्रित हैं। शिविर में भाग लेकर आत्मकल्याण के उपासक बनें। आपके निवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क रहेगी।

नोट : शिविरार्थियों को शिविर-दिनचर्या में सहभागी बनना आवश्यक है। शिविर में कॉपी, पेन, सम्भव हो तो पंचमहायज्ञविधि की पुस्तक तथा ऋतु अनुसार ओढ़ने के लिए चादर साथ लायें।

मार्गसंकेत

देहरादून रेलवे स्टेशन एवं बसस्थानक (ISBT) से प्रेमनगर पहुँचकर पौन्धा जाने वाले मैजिक से गुरुकुल पौन्धा पहुँचा जा सकता है। जिन सज्जनों की सूचना पूर्व में ही होगी तो उन्हें रेलवे स्टेशन अथवा बसस्थानक से लाने की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई है।

सम्पर्क सूत्र

श्री सुखवीर आर्य (संयोजक एवं मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) - 9350502175
गुरुकुलपौन्धा - 9411106104, 7900665649, 9411310530, 7017579268, 8810005096

प्रतिष्ठा में,

एक करोड़ सत्तावन लाख+
लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

शुद्ध तांबे से निर्मित
वैदिक यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्र

प्राप्ति स्थान:-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें मो. 09540040339

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह